8

अनुप्रयुक्त कला : ग्राफिक डिजाइन

अनुप्रयुक्त कला के अंतर्गत ग्राफिक डिजाइन एक चाक्षुष संप्रेषण की कला है जिसमें छवियों, फांट एवं विचार के समन्वय से प्रेक्षक तक वांछित सूचना संप्रेषित की जाती है। ग्राफिक डिजाइनर छवियों एवं सुलेखन को मिलाकर अपने ग्राहक द्वारा वांछित संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं। वे अक्षर आकारों (टायपोग्राफी) एवं छवियों (फोटोग्राफी, दृष्टांत चित्र एवं ललितकला) द्वारा प्रदत्त सृजनात्मक संभावनाओं को तलाशते हैं। यह डिजाइनर पर निर्भर करता है कि वे न केवल उपयुक्त अक्षर आकारों (टायपोग्राफी) एवं छवियों को ढूँढे या उनका सृजन करें बल्कि उनके बीच श्रेष्ठ संतुलन भी स्थापित करें। एक अच्छी डिजाइन हमारी दुनिया ही बदल देता है। चाहे जो भी संदेश वह संप्रेषित करे जैसे सामाजिक संदेश, किसी व्यवसाय को बढ़ावा, लोगों को किसी संस्था से जुड़ने का आह्वान, लोगों को किसी उम्मीदवार को वोट देने का आग्रह, अथवा राहगीरों को रास्ता बताने का कार्य एवं डिजाइन; हमेशा दर्शक से सम्पर्क बना लेता है। ग्राफिक डिजाइन एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें अक्सर डिजाइनर एवं ग्राहक भागीदार रहते हैं। इक्कीसवीं सदी में किसी ग्राफिक डिजाइन का आमतौर पर प्रयोग, पहचान चिन्ह (लोगो एवं ब्राडिंग) बनाने, प्रकाशन कार्य (पत्रिका, पुस्तक, एवं समाचार पत्र), विज्ञापन एवं उत्पादों के पैकेजिंग तैयार करने में किया जाता है। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि किसी उत्पाद पैकेजिंग डिब्बे पर लोगो या अन्य आर्टवर्क बनाया गया हो, जिसको व्यवस्थित कथ्य एवं आकृतियों तथा रंगों जैसे शुद्ध डिजाइन तत्व मिलकर एक हो रहे हों। संयोजन, ग्राफिक डिजाइन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक समय तक कला ने बदलाव एवं विकास का एक लम्बा सफर तय किया है। चित्रांकन के औजार भी बदल गए हैं। पेंसिल, चारकोल एवं तूलिका से अब यह डिजिटल माउस तक पहुँच गए हैं। ड्राइंग शीट एवं कैनवास का स्थान अब डिजिटल स्क्रीन ने ले लिया है। अनेक प्रकार के उत्कृष्ट सॉफ्टवेयर, जैसे- पेंट, फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, कोरल ड्रॉ एवं इन डिजाइन आदि के प्रयोग से कला के विद्यार्थी एवं व्यावसायिक कलाकार एवं चित्रकार डिजिटल ग्राफिक डिजाइन तैयार करते हैं जो उनकी आवश्यकताओं के बहुत ही अनुरूप होते हैं। डिजिटल डिजाइन में चाक्षुष सौन्दर्य से बढ़कर अनेक तत्व, जैसे- आपसी विचार-विमर्श, सूचनाएँ, उपकरणों की समझ एवं इलैक्ट्रॉनिक कौशल भी आवश्यक होते हैं। परन्तु इन सबसे

बढ़कर, यह ग्राफिक डिजाइनर का सृजन कौशल है जो सबसे अधिक महत्व रखता है। हाथ से बनाये गए ग्राफिक डिजाइन की तुलना में डिजिटल डिजाइन पुनरुत्पादन हेतु अधिक सुविधाजनक होते हैं। छपाई पद्धति के डिजिटल हो जाने के कारण अब हाथ से बने ग्राफिक डिजाइन को भी पहले डिजाइन मोड में बदलना पड़ता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- ग्राफिक डिजाइन बनाने हेतु हाथ से एवं डिजिटल पद्धति से डिजाइन बनाने का कौशल विकसित कर सकेंगे;
- हाथ से एवं डिजिटल पद्धति से ग्रीटिंग कार्डस बना सकेंगे;
- पुस्तक एवं पत्रिका हेतु हाथ से तथा डिजिटल पद्धति से मुखपृष्ठ तैयार कर सकेंगे;
- कम्पनी, सेवा एवं उत्पाद हेतु लोगो तैयार कर सकेंगे;
- डिजिटल आर्टवर्क को कैसे संरक्षित किया जाए एवं अन्य उपयोगकर्ताओं से इनका किस प्रकार आदान-प्रदान किया जाए, यह स्पष्ट कर सकेंगे;
- आज के समय में डिजिटल आर्ट कितनी सुविधाजनक है, यह उल्लेख कर सकेंगे।

8.1 ग्रीटिंग कार्ड का डिजाइन तैयार करना

ग्रीटिंग कार्ड बहुत ही सामान्य उद्देश्य से बनाए जाते हैं। ये न केवल आपके प्रियजनों के चेहरे पर एक मुस्कुराहट ले आते हैं बल्कि ये यह भी बताते हैं कि आप उनके लिए क्या भावनाएँ रखते हैं। धार्मिक त्यौहार, जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, विवाह अथवा कोई महत्वपूर्ण दिन आदि अवसरों पर हम इन्हें भेजते हैं और लोगों द्वारा भेजे गए कार्ड को प्राप्त करते हैं। आकर्षक ग्रीटिंग कार्ड जिन्हें अच्छी तरह डिजाइन किया गया हो, वे मित्रों एवं परिजनों को एक दूसरे के करीब ले आते हैं। ग्रीटिंग कार्ड आमतौर पर एक साधारण दस्तावेज होता है- एक मोड़ा हुआ कागज़ जिस पर संदेश के साथ मुखपृष्ठ पर कोई छवि या कथ्य छपा होता है।

8.1.1 हाथ से ग्राफिक डिजाइन तैयार करने हेतु आवश्यक सामग्री

- एच.बी एवं 2बी. पेंसिल
- 1/4 माप की कार्टिरेज पेपर शीट।
- 2, 4, 6 एवं 8 नम्बर के गोल ब्रश।
- पोस्टर कलर
- स्केल
- कंप्यूटर
- पेंट, कोरल ड्रा, एवं फोटोशॉप जैसे सॉफ्टवेयर।

अभ्यास 1

हाथों से ग्रीटिंग कार्ड बनाना

हम कार्टिरिज पेपर शीट पर पोस्टर कलर से दीपावली ग्रीटिंग कार्ड बनायेंगे।

प्रथम चरण

सर्वप्रथम एक ए4 माप की कार्टिरिज शीट लें एवं उसे दोहरा मोड़ लें। इस पर एक खड़ा आयाताकार बनाएँ एवं स्थान को डिजाइन के अनुरूप बाँट लें। अब इसमें एक कंदिल और एक प्रज्वलित दीपक चित्रित करें।

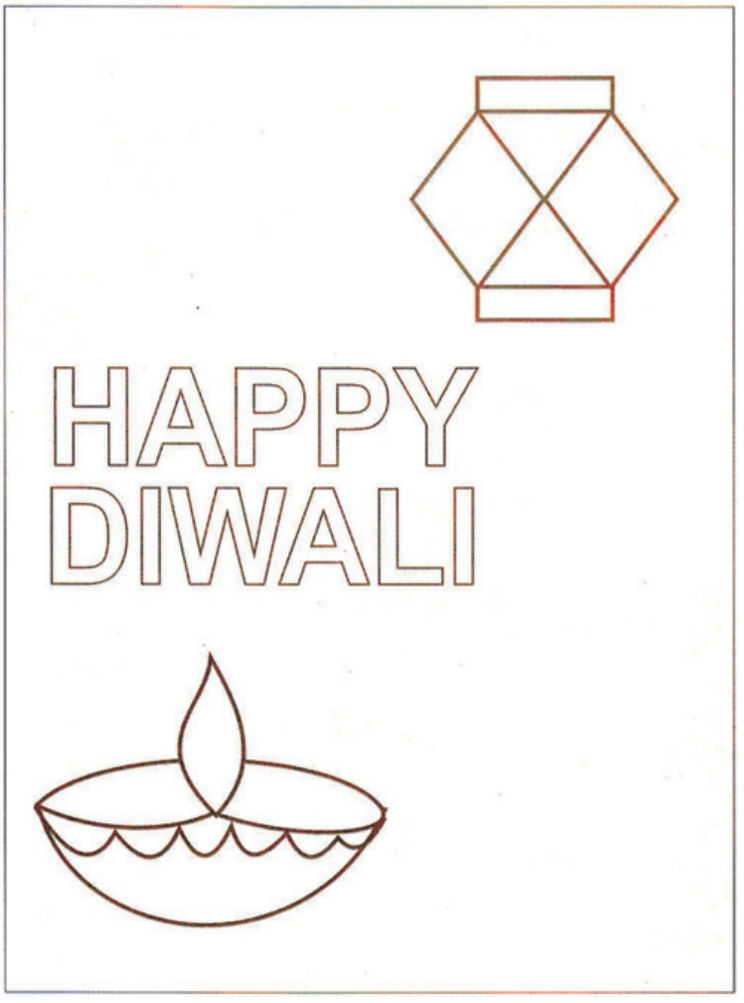

चित्र 8.1

दूसरा चरण

बाँयी ओर नीचे बनी कंदिल एवं दीपक तथा लौ में रंग भरें। बीच में 'Happly Diwali' लिखे। चित्र 8.2 देखें।

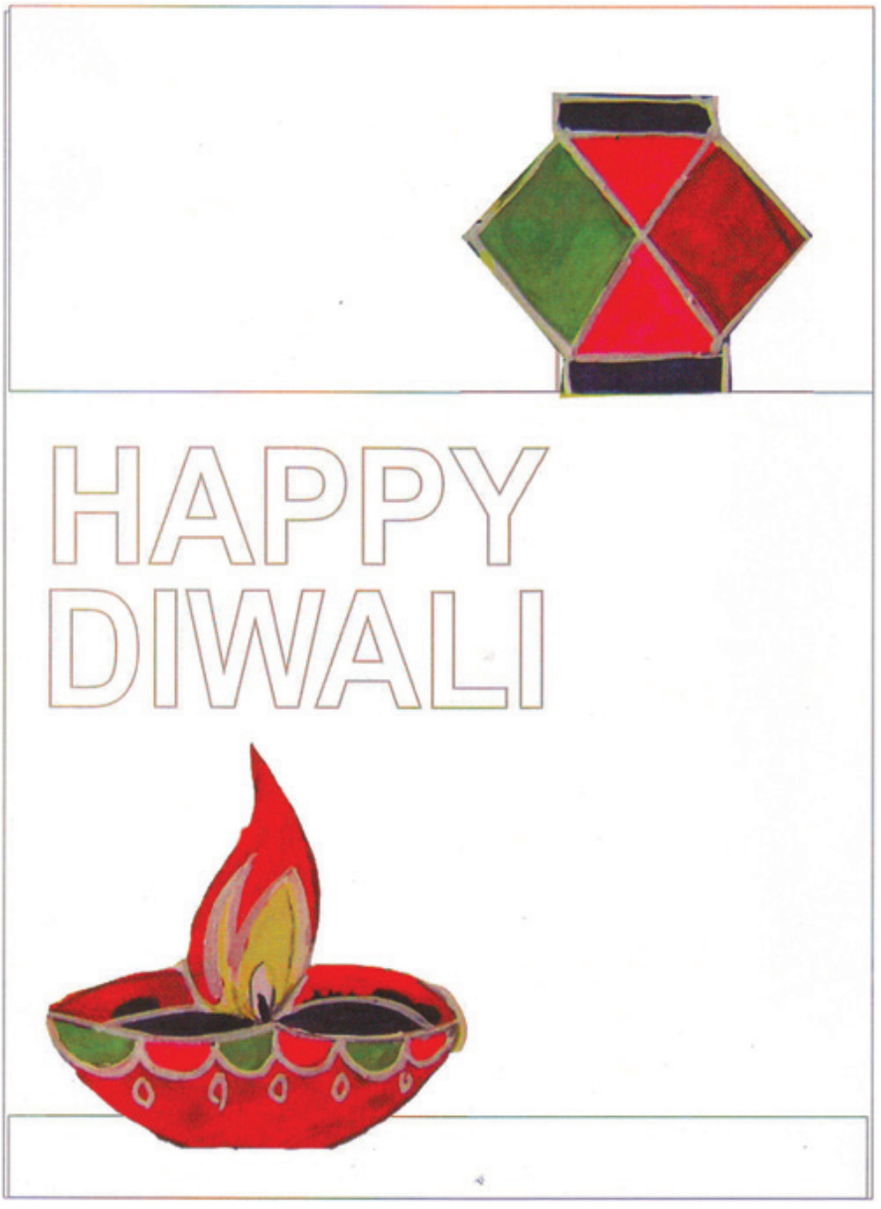

चित्र 8.2

तीसरा चरण

दिए गए डिजाइन के अनुसार पृष्ठभूमि में पीले और नीले रंग भरें। फिर कुंदील और दिए के चित्र में गहरे रंग भरें। 'Happly Diwali' लिख गए स्थान पर रंग भरें। कार्ड के खाली स्थान को भी चमकीली चीजों या मनपसंद चीजों से भर सकते हैं (चित्र 8.3 देखें)।

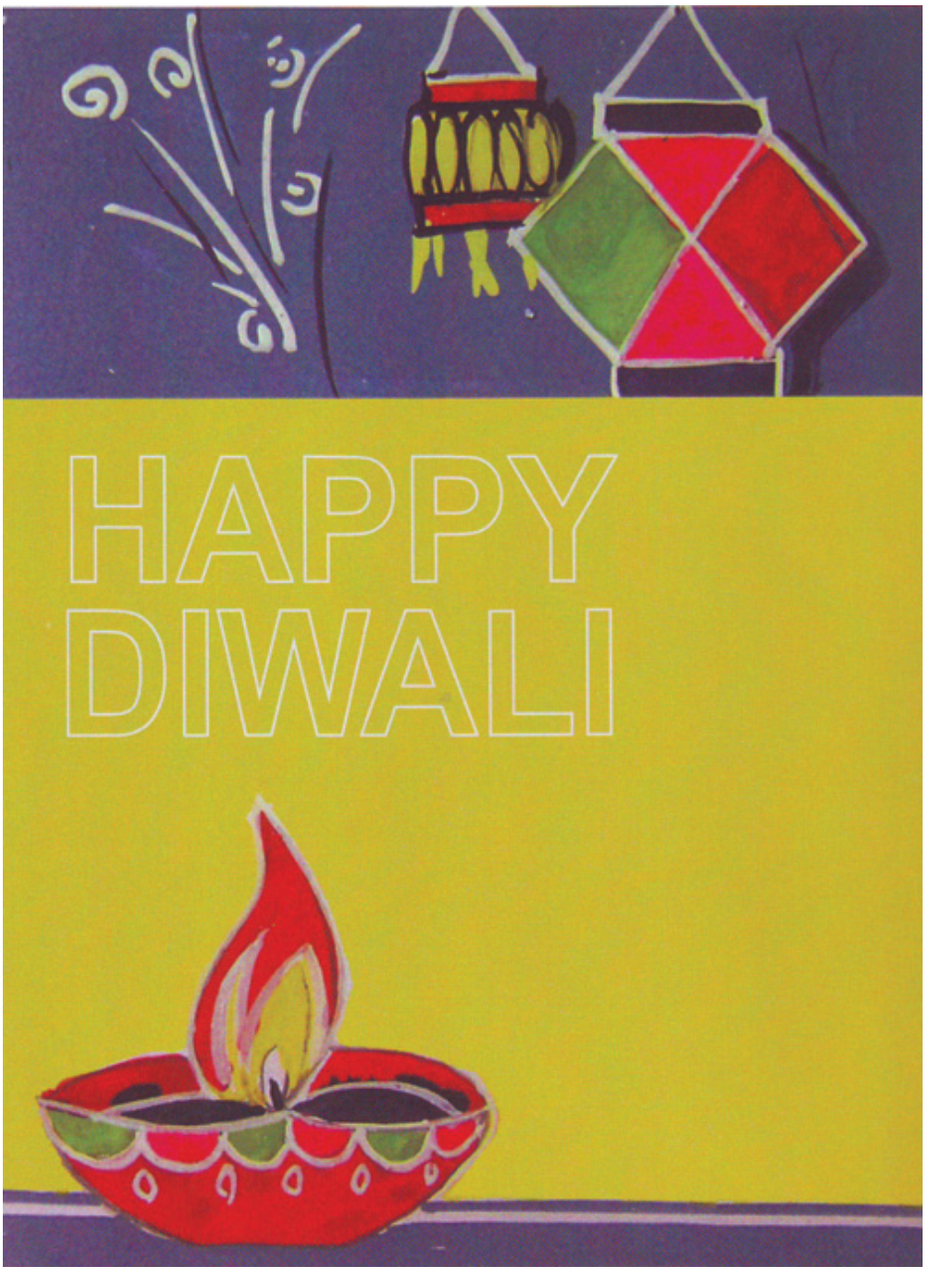

चित्र 8.3

चौथा चरण

बाह्य रेखाओं को विपरीत रंगों द्वारा चित्रित कर उनकी शोभा बढ़ाएँ। अब आपका रंग-बिरंगा ग्रीटिंग कार्ड तैयार है।

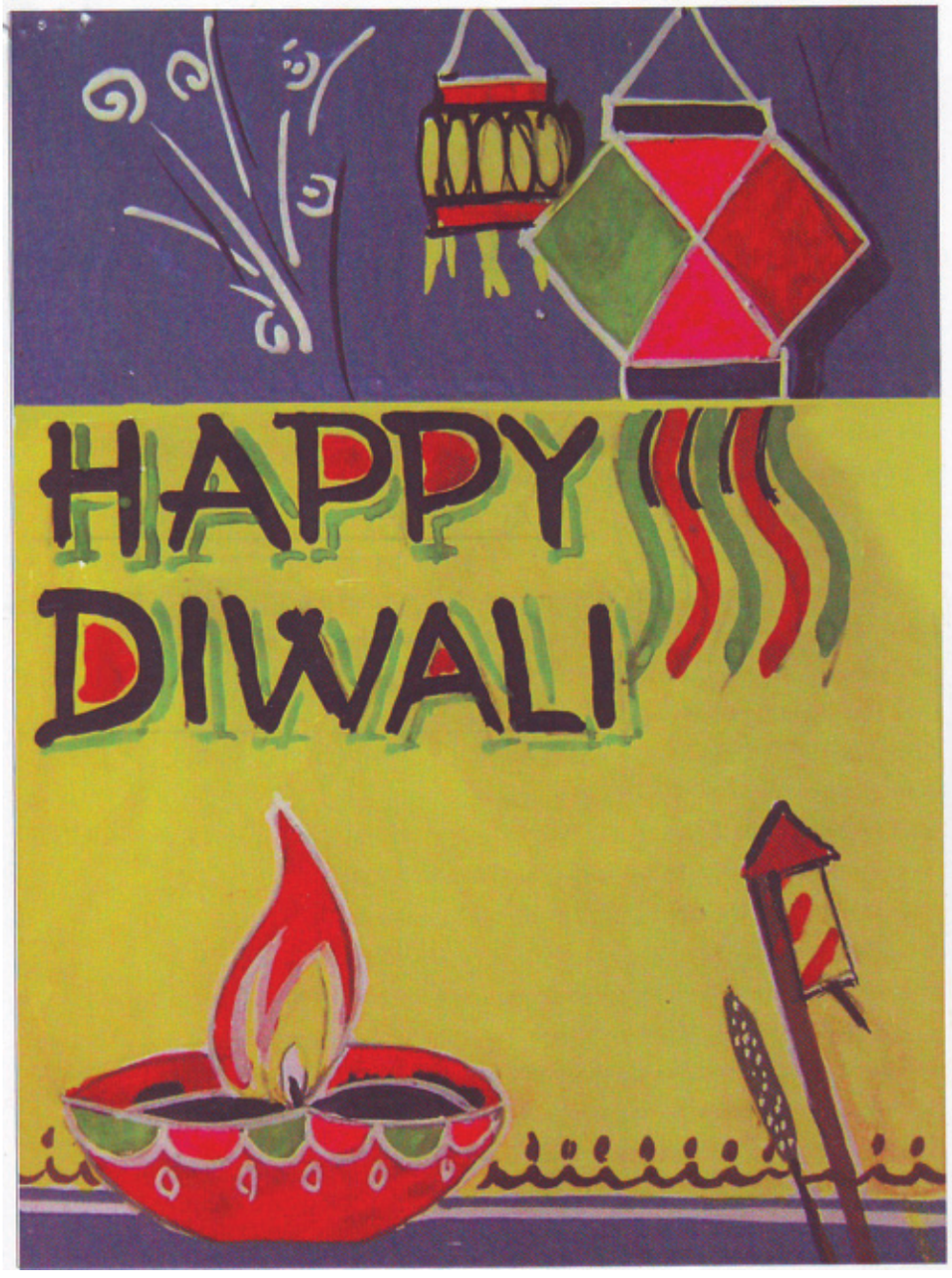

चित्र 8.4

अभ्यास 2

कंप्यूटर से ग्रीटिंग कार्ड डिजाइन करना

हम कंप्यूटर एक जन्मदिन कार्ड डिजिटल पद्धति से तैयार करेंगे।

प्रथम चरण

आपने कंप्यूटर पर पेंट साफ्टवेयर में एक नया पेज खोलें। टूल्स में से ब्रश टूल चुनें एवं क्रयोन ब्रश का ऑप्शन लें। अब अपनी पसंद का चमकीला रंग चुनकर पृष्ठभूमि में भरें एवं एक रंगीन पृष्ठभूमि तैयार कर लें जैसा कि चित्र 8.5 में दर्शाया गया है।

चित्र 8.5

द्वितीय चरण

अब क्लिपबोर्ड टूल में जाएँ और वहाँ क्लिपआर्ट आप्शन से एक केक का फोटो चुनें और उसे इंपोर्ट करके तैयार की गई पृष्ठभूमि पर वांछित स्थान पर पेस्ट कर दें। चित्र 8.6 के अनुरूप।

चित्र 8.6

तृतीय चरण

अब शेपटूल की सहायता से विभिन्न माप एवं रंगों के कुछ सितारों को केक के दाएँ एवं बाएँ बना दें। (चित्र 8.7 देखें)।

चित्र 8.7

चौथा चरण

अब टैक्सट टूल की सहायता से केक पर 'हैप्पी बर्थ डे' अलग रंग से लिख दें। अब कार्ड के निचले हिस्से में एक आयताकार की बाह्य रेखा खीचें तथा इसमें रिवर्स फोरमेशन में वांछित संदेश लिखें। अब आपका कार्ड तैयार है। इस डिजाइन को जेपीजी अथवा टिफ फार्मेट में डाक्यूमेंट फोल्डर में सुरक्षित करें।

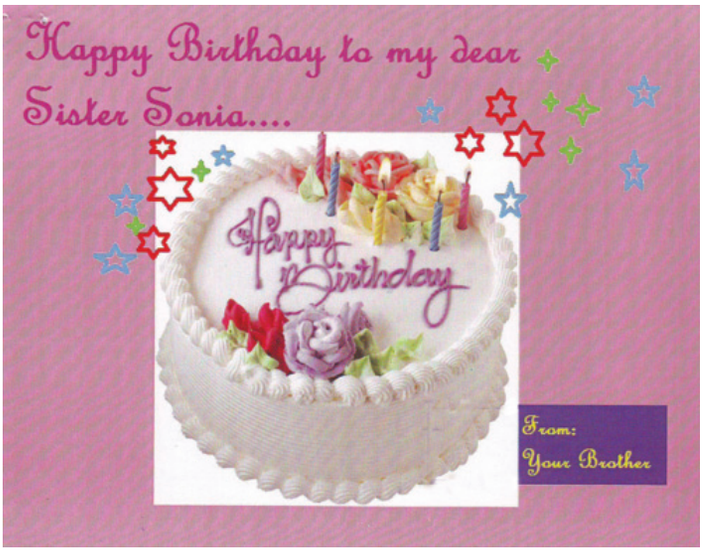

चित्र 8.8

अभ्यास 3

लोगो डिजाइन करना

लोगो किसी संस्था का प्रतीक चिह्न होता है। लोगो किसी कम्पनी की पहचान दिखाकर उसका प्रतिनिधित्व करता है तथा उसे एक अर्थ देता है। यह कम्पनी की ब्रैन्ड स्ट्रेटजी का अभिन्न अंग होता है तथा इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। लोगो के अभाव में उपभोक्ताओं को भिन्न-भिन्न उत्पादों एवं सेवा प्रदाताओं को पहचानना कठिन हो जाता है। कोई कम्पनी क्या उत्पाद एवं सेवा दे रही है, लोगो उसे ग्राफिक के रूप में दर्शाता है। लोगो किसी भी ब्रान्ड को पहचान देता है तथा व्यवसाय का महत्व बढ़ाता है। कभी-कभी कम्पनी के नाम को लोगो डिजाइन का आधार बनाया जाता है। एक अनूठे अक्षर आकार (फौंट) एवं प्रारूप से उत्कृष्ट लोगो बनाया जा सकता है।

लोगो बनाने की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कार्य लोगो हेतु अवधारणा का चुनाव करना है। यह प्रक्रिया ठीक वैसी ही है जैसे किसी के लिए नाम का चुनाव। पहले आपको यह सुनिश्चित करना होता है कि लोगो द्वारा आप कम्पनी के बारे में क्या बताना चाहते हैं। एक कम्पनी को दर्शाने के अनेक ढंग हो सकते हैं। हो सकता है कि एक रीयल स्टेट कम्पनी के लिए घर की तस्वीर या कार बनाने वाली कम्पनी के लिए आपके मस्तिष्क में कार की तस्वीर लोगो के रूप में उभरे। किसी कम्पनी की विचारधारा दर्शाने हेतु आप एक अमूर्त छवि का भी प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए एक अजमाई हुई एवं जमी हुई कम्पनी के लिए एक ज्यामितिक आकृति जैसे पिरामिड की आकृति उपयुक्त हो सकती है। कुछ कम्पनियाँ एक से अधिक व्यवसायों में हो सकती हैं, अत: वे अधिक बुनियादी छवियों को पसंद करेंगी। परन्तु आप इसे अधिक तकनीकी दर्शाने हेतु सीधी रेखाओं एवं धुमावों के माध्यम से बना सकते हैं अथवा इसे अधिक आनुपातिक एवं ज्यमितीय रूप देकर विशिष्ट रूप दे सकते हैं। लोग एक सहज लोगो को, जिसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित हो, आसानी से पहचान लेते हैं। किसी लोगो को आकर्षक एवं स्मरणीय होना चाहिए।

हाथ से लोगो तैयार करना

यहाँ हम भारतीय डाक हेतु हाथ से लोगो तैयार करेंगे। लोगो तैयार करने हेतु सबसे पहले आप एक रफ शीट पर कार्य करेंगे। जब आप ऐसा रेखांकन तैयार कर लेंगे जो आपके विषय के लिए उपयुक्त हो, तब आप उसे अंतिम रूप देने हेतु तैयारी करेंगे।

पहला चरण

कार्टिरेज पेपर शीट पर पेंसिल से वांछित रेखाचित्र तैयार करें। शीट के ऊपरी भाग में चित्र 8.9 के अनुरूप ग्राफिक आकृति तैयार कर लें।

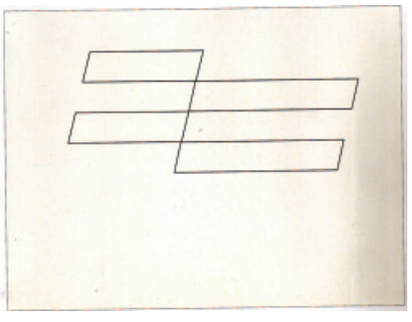

चित्र 8.9

द्वितीय चरण

शीट के निचले भाग में पेंसिल से 'इण्डियन पोस्ट' लिखें (चित्र 8.10 के अनुरूप)।

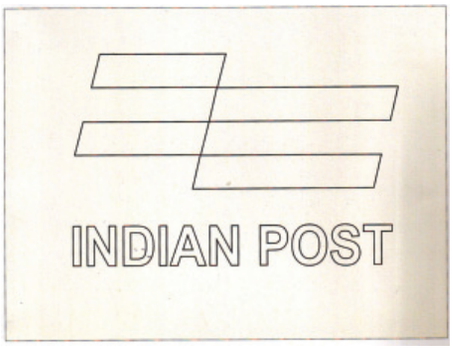

चित्र 8.10

तृतीय चरण

अब ग्राफिक आकृति में सफाई से रंग भरें। इस लोगो में पोस्ट ऑफिस लाल रंग में उपयुक्त रहेगा। (चित्र 8.11 के अनुरूप)

चित्र 8.11

चौथा चरण

अब शीट के निचले भाग में लिखे 'इण्डियन पोस्ट' वाक्य में बहुत ही सावधानीपूर्वक काला रंग भरें। डिजाइन को बेहतर करने हेतु अतिरिक्त धब्बे सफेद पोस्टर कलर से दूर करें। अपना लोगो अब तैयार है। (चित्र 8.12)

चित्र 8.12

अभ्यास 4

डिजिटल पद्धति से लोगो बनाना

लोगो का डिजिटल ग्राफिक डिजाइन बनाने के लिए हम एन. आई. ओ. एस. का लोगो चुन रहे हैं। शिक्षार्थी अभ्यास के लिए यही लोगो बना सकते हैं।

प्रथम चरण

कोरल ड्रॉ सॉफ्टवेयर में एक नया पेज खोलें, टूलबॉक्स से आयाताकार का टूल चुनें। चुनकर पेज पर एक आयाताकार की रचना करें। (चित्र 8.13 के अनुरूप)।

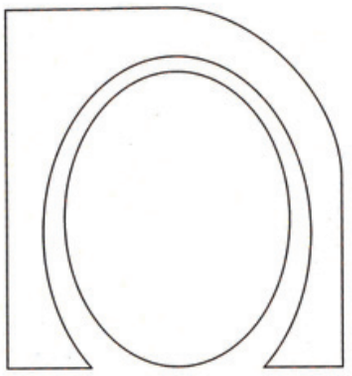

चित्र 8.13

जैसे कि हम देख सकते हैं कि इस लोगो में एन.आई.ओ.एस. सभी अक्षर एक साथ समाहित हैं। आई के लिए एक लौ के समान आकृति बनाई गई है।

द्वितीय चरण

अब फ्री हैण्ड टूल एवं शेष टूल की सहायता से सभी वांछित अक्षरों की अलग-अलग बाह्य रेखा खीचें। (चित्र 8.14 के अनुरूप)।

चित्र 8.14

तृतीय चरण

अब एक अलग परत पर लौ का चित्रण करें। अब तैयार कर लिए गए अक्षरों की प्रत्येक परत में गहरा नीला रंग भरें, लौ में नारंगी रंग भर दें। (चित्र 8.15 के अनुरूप)।

चित्र 8.15

चतुर्थ चरण

अब टैक्स्ट् टूल की सहायता से डिजाइन के निचले भाग में हिन्दी भाषा में संस्थान का ध्येय वाक्य लिखें एवं इसमें नारंगी रंग भर लें। लिखे हुए वाक्य को 'कन्वर्ट टू कर्व' करें। अब अलग-अलग भागों को ग्रुप कर लें। (चित्र 8.16 के अनुरूप)।

चित्र 8.16

अभ्यास 5

लोककला या जनजातीय शैली में पुस्तक का मुख्यपृष्ठ हाथ से बनाना

किसी भी पुस्तक के मुख्यपृष्ठ को डिजाइन करने का मूल सिद्धांत यह होता है कि उसका डिजाइन पुस्तक के कथानक से मेल खाता है। इसका आशय यह है कि पुस्तक डिजाइन पुस्तक में दिए गए कथ्य की शैली, प्रारूप एवं संदेश के अनुरूप होना चाहिए। एक पुस्तक में मुख्यपृष्ठ में निम्न तत्व होने चाहिए :

1. शीर्षक
2. उपशीर्षक
3. आकल्पन (डिजाइन) एवं प्रारूप
4. पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ (बैक कवर)
5. स्पाइन
6. लेखक या संक्षिप्त जीवन वृतांत

यहाँ हम पुस्तक का केवल सामने वाला मुखपृष्ठ तैयार करेंगे।

सबसे पहले हम पुस्तक का चुनाव करेंगे। हम लोक कला की एक पुस्तक का मुख्य पृष्ठ बनाएँगे। क्योंकि यह पुस्तक भारतीय लोक कला पर केन्द्रित है अतः हमें मुख्यपृष्ठ बनाने में भी यह बात ध्यान में रखनी होगी। हम कुछ लोक चित्रों के रेखांकन तैयार कर सकते हैं। हम यहाँ वार्ली चित्रों का प्रयोग करेंगे क्योंकि यह एक प्राचीन भारतीय लोक कला का रूप है।

प्रथम चरण

पहले 1/4 माप की कोर्टिरेज पेपर शीट लें, उस पर एक आयताकार बनाएँ एवं वार्ली चित्रों के कुछ रेखांकन तैयार करें। (चित्र 8.17 के अनुरूप)।

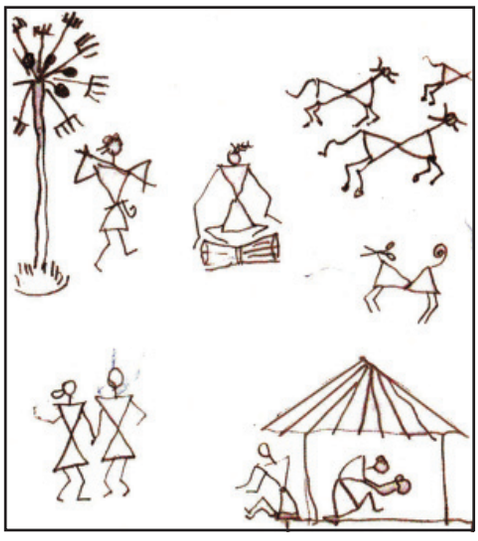

चित्र 8.17

द्वितीय चरण

कार्टिरेज पेपर शीट पर वार्ली चित्र शैली में कुछ रेखांकन बनाए। इन रेखांकनों को गहरा कर लें। ताकि जब पृष्ठभूमि में रंग भरा जाए तब भी यह रेखाकंन दिखते रहें। (चित्र 8.18 के अनुरूप)।

चित्र 8.18

तृतीय चरण

पृष्ठभूमि में एक हल्का हरा स्थान बनाते हुए पीला रंग भरें। अब बनाई हुई आकृतियों में गहरा कत्थई रंग भर दें। (चित्र चित्र 8.19 के अनुरूप)।

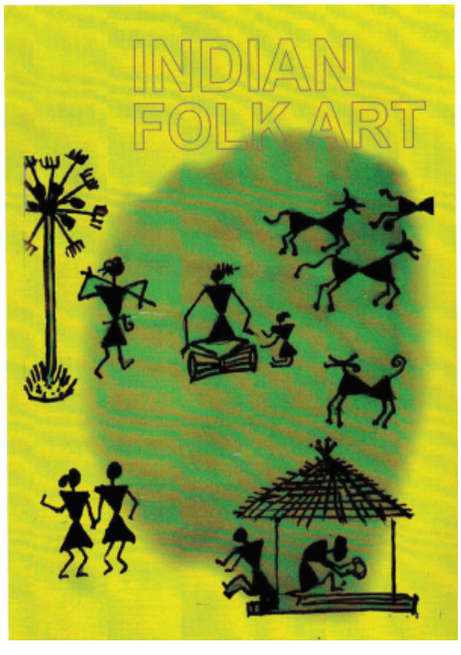

चित्र 8.19

चतुर्थ चरण

ऊपर की ओर पुस्तक का शीर्षक गहरे हरे रंग से लिखें ताकि रंग संगति बनी रहे। अब भारतीय लोक कला पर आपका मुखपृष्ठ तैयार है। (चित्र चित्र 8.20 के अनुरूप)।

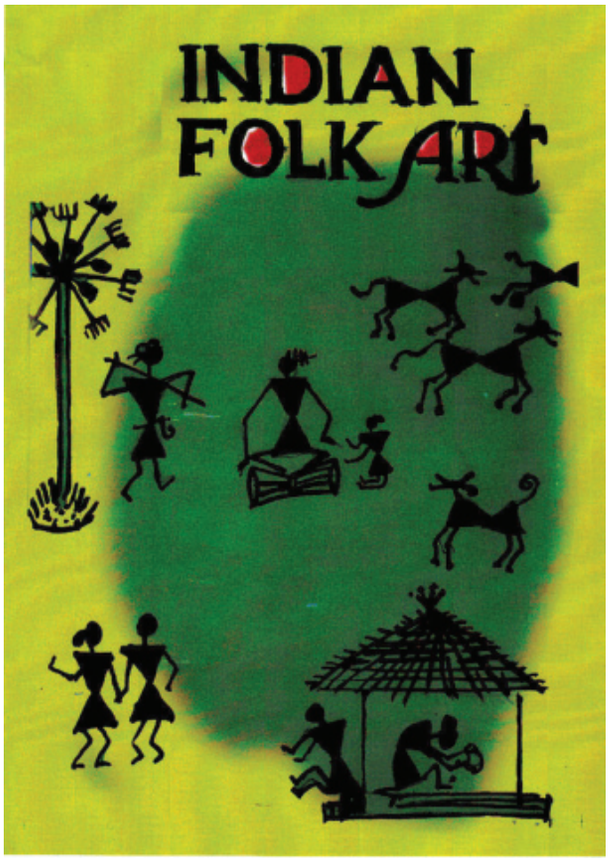

चित्र 8.20

अभ्यास 6

डिजिटल पद्धति से पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजाइन करना

डिजिटल पद्धति से पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजाइन करने के लिए भी वही मूल सिद्धांत हैं जो हाथ से डिजाइन बनाने के लिए हैं। यहाँ अंतर केवल यह है कि हम हाथ के स्थान पर लैपटॉप या डैस्कटॉप कंप्यूटर काम में लाते हैं। हम गणित के लिए मुख्यपृष्ठ डिजाइन तैयार करेंगे। यहाँ भी मुख्यपृष्ठ के लिए पुस्तक में दी गई सामग्री से मेल खाती हुई ग्राफिक डिजाइन प्रयुक्त की जाएगी।

प्रथम चरण

कोरल ड्रॉ में एक नया पृष्ठ खोलें एवं टूल बॉक्स से आयताकार टूल चुनकर एक आयताकार तैयार करें। अब क्लिप आर्ट से पृष्ठभूमि में लगाने हेतु पुस्तक की विषय वस्तु से मेल खाता हुआ ग्राफिक चुनें और इंपोर्ट करें। (चित्र 8.21 के अनुरूप)

चित्र 8.21

द्वितीय चरण

अब टैक्स्ट टूल की सहायता से मुख्यपृष्ठ के निचले आधे भाग में गणित के विभिन्न अंकों को एक सुन्दर कोलाज रूप में संयोजित करें। (चित्र 8.22 के अनुरूप)।

चित्र 8.22

तृतीय चरण

अब टैक्स्ट टूल की सहयता से पुस्तक का शीर्षक एवं उप शीर्षक तैयार करें तथा अन्य विवरण लिखें। (चित्र 8.23 के अनुरूप)।

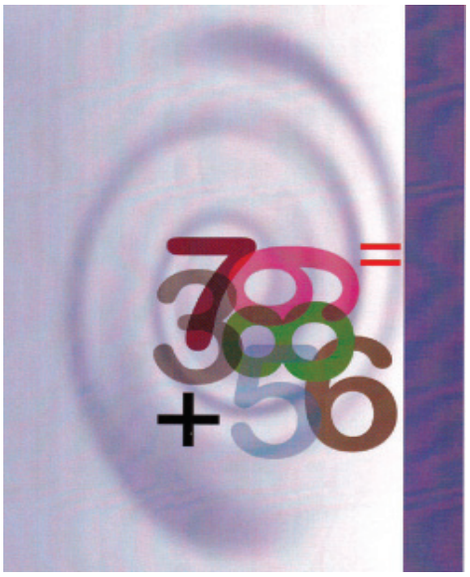

चित्र 8.23

चतुर्थ चरण

हमने यह मुख्यपृष्ठ रा.मु.वि.शि.सं. के लिए तैयार किया है। अतः उसका लोगो पृष्ठ के बाएँ, निचले भाग में बना दें। अब गणित विषय पर आपकी पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजिटल मोड में तैयार है। अब इस डिजिटल डिजाइन को सी.डी.आर. एवं पी.डी.एफ. मोड में सुरक्षित कर लें तथा इसका प्रिंट ले लें। (चित्र 8.24 के अनुरूप)।

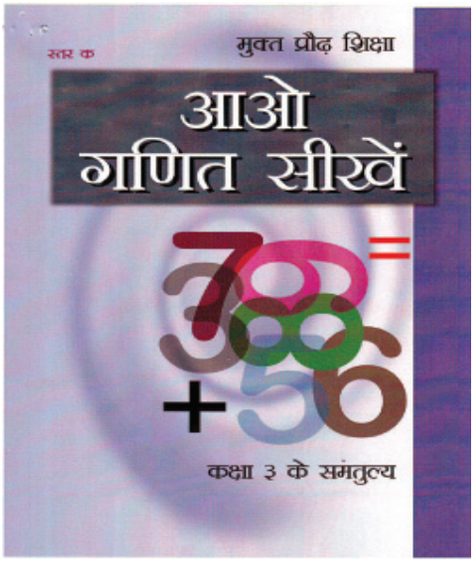

चित्र 8.24

आपने क्या सीखा

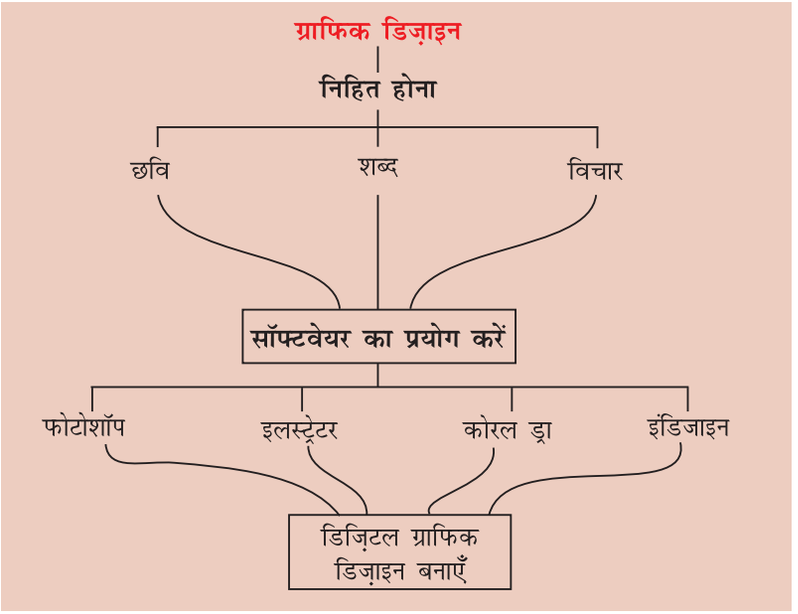

पाठांत प्रश्न

1. हाथ से पुस्तक का मुखपृष्ठ बनाएँ।
2. एक कार्ट्रिज शीट पर वारली शैली के कुछ मोटिफ लेकर एक ग्रीटिंग कार्ड बनाएँ।
3. A4 आकार की कार्ट्रिज शीट में लोगो डिज़ाइन करें।
4. पोस्टर कलर के साथ A4 आकार में दिवाली ग्रीटिंग कार्ड बनाएँ।

शब्दकोश

संचार	संदेश
टाइपोग्राफी	अभिलेख
खत्म करना	मुक्त हो जाना
प्रागैतिहासिक	प्राचीन
इंटरैक्शन	लेन-देन
दर्शन	दृष्टिकोण